Written by Jagmohan
Thursday, 26 May 2011 11:04 - Last Updated Thursday, 26 May 2011 11:19

□□□□□□ □□□□□□

आदरणीय आज्ञाराम 'प्रेम' हिंदी लिखने लिखाने के मामले में प्रभाष जोशी या राजेंद्र माथुर कभी नहीं थे. लेकिन जिस अख़बार पंजाब केसरी के वो समाचार सम्पादक थे वो तब भी पंजाब में बाकी सारे हिंदी अखबारों को मिला कर भी उनसे ज्यादा बिकता था , आज उनके स्वर्गवास के बाद भी
वैसे
ही बिकता है. इसकी □क वजह तो वे खुद थे और इसकी उस से बड़ी वजह उनके मालिकों की सोच है.

उनके यहाँ तो इन्द्र भूषण रस्तोगी भी आता है तो आज्ञाराम 'प्रेम' हो जाता है. पंजाब केसरी ने शहीद परिवार फंड के ज़रि□ पंजाब के लोगों के साथ □क भावनात्मक लगाव पैदा किया है. सोचा भी है किसी और ने ? 'अजीत' ने मौके की सरकार के साथ पंगा ले के बिजली कटवाई और अखबार जेनरेटर चला के निकाला. है किसी और में सरकार को यों ठेंगा दिखाने की कुव्वत
?
कोई और अखबार होता तो उसके कर्मचारी तो क्या मालिक भी भाग खड़े हु□ होते पंजाब से. सच तो ये है कि पंजाब में आकर पत्रकारिता का धर्म भी अधर्म किया है तो बाहर वालों ने. पंजाब केसरी के बारे में ये तो कह लेते थे लोग कि वो अकालियों के खिलाफ चलता है या ये कि अजीत अकालियों के हक़ में है. मगर पेड न्यूज़ जैसा सिंड्रोम पंजाब में
'
बाहरी
'
अखबारों के साथ आया है.
'
जागरण
'
इस मैदान में सबसे आगे है.
क्यों अपना ईमान बेचने पे उतारू हो जाते हैं ऐसे अखबार. इसका □क सीधा सादा जवाब है
,
कड़की. पेट की भूख और मुंह की लिप्सा गिरि पड़े
इंसान से सब कुछ कराती है.

देश के □क बड़े समाचारपत्र समूह के सम्पादक मालिक चंडीगढ़ आ□ □क बार. पंजाब में अपना संस्करण अभी चालू करना था उन्हें (वे अब इस दुनिया में नहीं हैं,सो उनका नाम नहीं लूँगा मैं). माउंट व्यू होटल में □क प्रेस कांफ्रेंस की उन्होनें. खाना वाना खिलाया. जाते समय सभी पत्रकारों को □क□ क लिफाफा दिया गया. कुछ ने लाबी में आकर खोला था तो उसमें दो दो सौ रूपये थे. नकद. पहले □क, फिर दो और फिर देखा देखी सभी वापिस अन्दर ग□ और लिफ़ाफ़े उन सज्जन के मुंह पर मार के आ□. वो उनकी संस्कृति थी. ये इनका
मिजाज़
था.

अखबार पंजाब में आता है. ये तय कर के नहीं आता कि आतंकवाद मटाना है. या उसके बाद जिस सामाजिक, आर्थिक पुनर्संरचना की ज़रूरत है वो करना है. तेरहवें के बाद चौदहवाँ संस्करण ला कर □ड की कीमत बढ़ाना मकसद है

,

कहीं कोई ज़मीन

,

लायसेंस या फिर सरकारी □ड चाहि□ तो उसके लि□ पेड/सोल्ड होने को तैयार है. हु□ है.

पंजाब

,

पंजाबियत

,

पंजाब के सरोकारों से कोई मतलब नहीं. सरकुलेशन समिटने लगती है. फिर विज्ञापन. और फिर स्टाफ. पत्रकार जो बाहर से भी ला□ होते है

,

कहीं के नहीं रहते.

जो मुझे बिहारी, पंजाबी के तराजू में तोलें □क सवाल उन से. क्या 'सामना' (जैसा, जिस तेवर और जिस रंग में रंग वो छपता है उसी तरह का) हरियाणा, यू पी

,

बिहार या दिल्ली में छप और बिक सकता था

?...

अगर नहीं तो फिर "राम मंदिर के नाम

पे

अपने सम्पादकक्मलेश्वर की उंगलियाँ रोज़ अयोध्या के खून" से रंगने वाला जागरण भी रोज़ी

,

रोटी और बेटी के रिश्तों से जुड़े पंजाब के हिन्दुओं को अपनी तरह की भावनाओं में बहा के पंजाब में बुद्धू नहीं बना सकता.

अब मैं बताता हूँ आप को और अब आप ठीक से समझ पायेंगे मेरी बात कि ये 'बाहर' के अखबार अपने साथ पत्रकार भी बाहर से क्यों लाते हैं. बाहर से इस लि□ भी लाते हैं वे पत्रकार कि उनका मकसद कोई स्थानीय पत्रकार पूरा करेगा ही नहीं. यही उनकी विडम्बना और यही उनके साथ जुडा हुआ अभिशाप है. 'जनसत्ता' लाया बाहर से देवप्रिय अवस्थी और प्रदीप पंडित को , तो वो कहाँ है?...

'हिंदुस्तान' जिस तेजी से आया उतनी ही तेजी से निबिट भी गया . 'सोहणी सिटी' नाम से □क परिशिष्ट रोज़ निकलते थे वो. .सोहणी सिटी का मतलब चंडीगढ़. मैं सोचता था शायद दूसरे शहरों के किसी और नाम से परिशिष्ट होते होंगे

.

बाहर

पंजाब में

कहीं कोई परिशिष्ट नहीं

.

न रिपोर्टर

,

न स्ट्रिंगर

न ही सरकुलेशन

.
□ कदफे
हन्दिुस्तान टाईम्स में लीड थी
,
.
हदिुस्तान में सगिल कलम खबर
मैंने
पूछा स्थानीय सम्पादक अकू श्रीवास्तव से □ कदनि
.
बोले
,
ये □ चटी की रणनीति है
.
रणनीति दल्ली में □ चटी की
.
टीम लखनऊ पार की
.
अखबार स्वर्ग सधिार गया
.
पायनयिर की सुन लीजयि
.
मुख्यमंत्री की
पत्नी का नधिन हुआ
.
सब छोटी बड़ी अखबारों ने पहले पेज पे ली खबर
.
पायनयिर ने पेज थ्री पर
जो आम तौर पर सटिी ख़बरों के लि□ होता है
.
उसके भी न□ सम्पादक यूपी बहिार के हैं
.
आज का पायनयिर देख लीजि□. चंडीगढ़ संस्करण के पहले पेज पर □ क भी छोटी बड़ी खबर चंडीगढ़ डेटलाइन या जनि दो राज्यों की वो राजधानी है उन से सम्बंधति नहीं है.

'अमर उजाला' भर लयि पंजाब से. झंडे तो क्या गड़ने थे. तम्बू भी उखड़ ग□. पंचकुला से हरयिाणा साधने चले थे. वहां भी वही 'बाहरी' सड्रिोम. अखबार राजधानी चंडीगढ़ (पंचकुला से छपने वाले संस्करण का प्रकाशन स्थान चंडीगढ़ ही है) में तो क्लकि कयि नहीं. अब दो दो चार चार शहरों के लि□ संस्करण नकिलने पे तुला है.

''जागरण' आया पंजाब. कितना छपता है कोई आपको नहीं बतायेगा. वहां सब पेड रहता है.पेड न्यूज़ की परंपरा उसी ने डाली. रपोर्टरों को चुनाव के आगे पीछे भी खबर बेचने के आधार पे रखा , निकिला. 'भड़ास' पे बहुत कुछ छपा है. देख लेना, यहाँ दोहराना क्या. सुना मोहाली □ डशिन आने वाला था. मैंने देखा नहीं. मैंने कभी सुना भी नहीं कि कहीं कोई खबर
'
जागरण
'
ने ब्रेक की हो.
पहले अखबार पतिभक्ति से चलता था
,
अब मातृशक्ति से चलता है
.
बड़ा दयालु अखबार है. प्यार अपरम्पार करता है. दिल किसी का नहीं दुखाता. सबको सहला लेता है.क्या पता कल कौन कुर्सी पे हो. सो गाड़ी प्यार और पुचकार से चलती है. कोई अफसर
,
नेता खिलाफ नहीं जाने देना. गुची पुची करते करते अब सब समिटने लगा है. अखबार का पंजाबी में कहें तो वकार कोई नहीं रहा.

सवाल भाषा का भी है. वो बड़ी वजह है समाज से संवाद न बन पाने में. उसकी चर्चा कल.